प्राचीन भारत का इतिहास

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्राचीन भारत का इतिहास

डॉ. जी.के. सिंह

नमूना • SAMPLE

ADHYAYAN
अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
नई दिल्ली

प्रकाशक :

अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स

4278/4बी, 105, जे.एम.डी. हाउस, मुरारी लाल स्ट्रीट
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 01123163018, 011-23277156
ई-मेल : adhyayanpublishers@yahoo.com

प्राचीन भारत का इतिहास

© लेखक

प्रथम संस्करण 2017
ISBN 978-81-8435-554-3

Printed in India

राकेश कुमार यादव द्वारा 'अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स' के लिए प्रकाशित।
आदिल प्रिंटोग्राफिक्स, दिल्ली द्वारा शब्द-संयोजन तथा तरुण ऑफसेट प्रेस, दिल्ली से मुद्रित।

नमूना • SAMPLE

अनुक्रम

	प्राक्कथन	*vii*
1.	भारत की भौगोलिक स्थिति, नस्लें, एवं मुख्य संचार मार्ग	1
2.	प्रागैतिहासिक काल	7
3.	सिंधु सभ्यताः उत्पत्ति/उद्भव और विकास	13
4.	सैधव सभ्यता व वैदिक काल में साभ्य विशम्य निरन्तरता	44
5.	लौहयुगीन संस्कृति	84
6.	प्राक् मौर्य काल (600 BC–400 BC) में राजनीतिक–आर्थिक, सामाजिकार्थिक स्थिति	87
7.	मौर्य काल	124
8.	सामाजिकार्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व प्रशासनिक स्थिति के संदर्भ में कुषाण–सातवाहन प्रमुख विशेषताएं तथा संगम काल	149
9.	गुप्त काल	165
10.	हर्ष	182

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक 'प्राचीन भारत का इतिहास' पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। पुस्तक विगत कई वर्षों के अथक परिश्रम के पश्चात अपना आकार पा सकी है यह मेरे लिये निश्चय ही परम सन्तोष का विषय है। प्रस्तुत संस्करण में एक ओर जहाँ इतिहास तथा संस्कृति पर उपलब्ध नवीनतम शोधों एवं सामग्रियों को समाहित कर पुस्तक को अधुनातन बनाने का प्रयास किया गया है वहीं प्रुफ की कमियों को दूर करने की पर्याप्त कोशिशों के बावजूद मुझे ये स्वीकार करते हुए अत्यंत कष्ट हो रहा है कि पुस्तक पूर्णतया त्रुटि रहित नहीं हो सकी है। अगले संस्करण में मैं अपनी इस कमी को अवश्य सुधार दूंगा—ऐसा विश्वास दिलाता हूँ।

प्रागैतिहास, आद्य-इतिहास, लौह युगीन संस्कृति, वृहत्पाषाणिक संस्कृति, प्राचीन मृद्भाण्ड परम्परायें जैसे कतिपय विषय/अध्याय इस पुस्तक में सम्मिलित किये गये हैं। साथ ही साथ प्रत्येक अध्याय में नवीनतम शोधों एवं उत्खननों के आधार पर अद्यावधि प्राप्त सूचनाओं का उल्लेख करते हुये उसे अधुनातन स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। नवीन प्रवृष्टियां सब प्रकार से पाठकों, विशेषकर उच्च प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये परिश्रमरत छात्रों के लिये, निश्चयतः उपयोगी सिद्ध होंगी। पुस्तक में कुछ और उपयोगी अध्याय सम्मिलित किए जा सकते थे लेकिन विभिन्न बाधाओं के कारण इस कार्य को अगले संस्करण तक के लिए स्थगित करना पड़ा। अतिवादी एवं पूर्वाग्रह युक्त विचारधाराओं से बचते हुए यथा संभव तथ्यात्मक जानकारी उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है।

मैं अपने समस्त गुरुजनों, इतिहास एवं संस्कृति के प्राचीन एवं अर्वाचीन मनीषियों, मित्रों तथा शुभेच्छुओं के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनके दिशा-निर्देश तथा सहयोग से पुस्तक का प्रकाशन संभव हो सका है। डॉ. अजय परमार, डॉ. सुरेशचन्द तथा डॉ. के.डी. शर्मा के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिनसे समय-समय पर विषय से सम्बन्धित सहायता मिलती रही। कुछ बहुमूल्य सुझावों के लिये मैं अपनी अर्धांगनी डॉ. रेनू चौधरी तथा परम मित्र डॉ. मानव कुमार का भी आभार मानता हूँ जिन्होंने समय-समय

SAMPLE

पर महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान किये। अध्ययन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स के भाई राजू ने प्रकाशन भार वहन कर पुस्तक को आकर्षक आकार प्रदान किया जिसके लिये वे धन्यवाद के अधिकारी हैं।

पुस्तक प्रतियोगी परिक्षाओं में इतिहास का विषय चुनने वाले परिक्षार्थियों का अधिकाधिक हित-साधन कर सके, यही मेरी कामना है तथा ईश्वर से प्रार्थना भी।

डॉ. गिरीश कुमार सिंह

नमूना • SAMPLE

1

भारत की भौगोलिक स्थिति, नस्लें, एवं मुख्य संचार मार्ग

भारत की भौगोलिक स्थिति

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति विश्व में अतुलनीय है। यह न केवल प्राचीनता की दृष्टि से, वरन् अपनी गौरवशाली एवं प्रगतिशीलता की दृष्टि से प्रसिद्ध रही है। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में रामेश्वरम तक पश्चिम में सिन्धु से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र तक के क्षेत्र को आर्यावर्त या भारत कहा गया। विष्णु पुराण में कहा गया है कि–

उत्तरं यत समुद्रस्य, हिमाद्रेश्चौव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम, भारती यत्र सन्ततिः ।।

'समुद्र (हिन्दमहासागर) के उत्तर में, हिमालय के दक्षिण में, जो देश है, वह भारत नाम का खण्ड कहलाता है तथा जहाँ के लोग भारत की सन्तति कहलाते हैं।'

भारत नाम 'भरत' नामक राजा के नामपर पड़ा। इसके अतिरिक्त भारत को आर्यावर्त, जम्बूद्वीप, हिन्दुस्तान, इण्डिया, नामों से भी जाना जाता है। एशिया में भारत एक विस्तीर्ण प्रायद्वीप है यह एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित है। भारत स्वयं एक उपमहाद्वीप है। डॉ. बनर्जी ने भारत के विषय में कहा है– 'इसकी विशालता, जलवायु की विभिन्नता, भौगोलिक विशेषताओं (स्थितियों) में अन्तर तथा विभिन्न प्रजातियाँ, जो इसमें रहती हैं, के कारण इसको एक महाद्वीप कहा जा सकता है।'

भौगोलिक दृष्टि से प्राचीन साहित्य में हमारे देश को पाँच भागों में बाँटा गया है परन्तु आधुनिक इतिहासकार प्राकृतिक संरचना की दृष्टि से इसके चार भाग करते हैंः–

(1)उत्तर का पर्वतीय भागः –तराई के दल–दलमय वन खण्ड से लेकर हिमालय के श्रृंगो तक यह क्षेत्र विस्तृत है। पुराणों में इसे 'पर्वताश्रयिन' कहा गया। इसमें

SAMPLE

कश्मीर, काँगड़ा, टेहरी, गढ़वाल, कुमाऊं, नेपाल, सिक्कम, भूटान तथा विशाल एवं सर्वोच्च पर्वत हिमालय भी है जो देश में उत्तर में 1500 मील लम्बी एक दीवार की भाँति खड़ा है। पटकोई व नागा पहाड़ियाँ आक्रमणकारियों के लिए दुर्गम एवं अभेद्य रही हैं। यह पर्वत बीच–बीच में दर्रों के कारण खण्डित है, इसीलिए विदेशी आक्रांता इन दर्रों से होकर भारत आने का साहस जुटा पाए।

भारत के उत्तर–पश्चिम में खैबर, गोमल, बोलन, टोची नाम के दर्रे हैं। खैबर दर्रे से होकर काबुल की घाटी, पेशावर होते हुए पंजाब में पहुँचने का मार्ग है, तथा गोमल, बोलन और टोची के दर्रे मुल्तान तथा सिंध में प्रवेश का मार्ग उपलब्ध कराते हैं। जब भी इस क्षेत्र में सुरक्षा को अनदेखा किया गया, तभी यूनानी, पारसी, हूण, तुर्क, मंगोल आदि हमारे देश में आ सके। यह पर्वतीय क्षेत्र प्रवेश द्वार ही नहीं है अपितु इसकी वाह्य ऊँची श्रेणियों के कारण साइबेरिया की शुष्क एवं ठण्डी हवाओं से भी भारत की रक्षा होती है। यह क्षेत्र सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करने में भी सहायक सिद्ध हुआ है। यहाँ से भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रचार–प्रसार हो सका। हिमालय अपनी निर्जनता के कारण ऋषि मुनियों का प्रिय स्थान रहा है। निर्जनता के कारण ऋषि मुनियों ने आश्रम बनाये एवं तपस्या की और अनेक ग्रन्थों की रचना की, इस कारण यह क्षेत्र तीर्थस्थली बन गया। हिमालय की तराई का प्रदेश घास व जंगलों से परिपूर्ण हैं।

(2) उत्तर का मैदान :– उत्तर के विशाल मैदान में सिन्धु, गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र के उपजाऊ मैदान तथा राजपूताना की मरूभूमि आती है। इन सब नदियों से सिंचित भूमि उर्वर होने के कारण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह भारतीय महाद्वीप का मुख्य केन्द्रीय भाग होने के कारण घना बसा हुआ क्षेत्र है। प्राचीन काल में आर्यावर्त नाम से विख्यात केन्द्र न केवल भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है, वरन प्राचीन एवं अर्वाचीन साम्राज्यों की राजधानियों व धार्मिक आंदोलनों का केन्द्र बिन्दु रहा है। यह क्षेत्र वैभवशाली नगरों के उदय की केन्द्रीय धुरी भी बना।

सांस्कृतिक एवं सामाजिक :प से समृद्ध होने के कारण आक्रांता इस प्रदेश के धन–वैभव, सम्पन्नता से आकर्षित हुए। इस प्रदेश की जलवायु जन–जीवन के अनुकूल है इससे कृषि व्यवसाय, उद्योग–धन्धे, जन–जीवन फला–फूला। आर्थिक रूप से समृद्धता के कारण यहां पर कला एवं साहित्य का समुचित विकास हो सका। इस क्षेत्र में अनेकानेक महान योद्धाओं की जन्मभूमि रही है जिससे यहाँ महान वंश पल्लवित हुए। डॉ. आरडी. बनर्जी ने लिखा है–'सिन्धु नदी गंगाएवं ब्रह्मपुत्र के विशाल उपजाऊ मैदानों ने मानव जाति के इतिहास के आरम्भ से ही भारत के बाहर रहने वाले घुमक्कड़ कबीलों को आक्रमण के लिए अपनी ओर आकर्षित किया है।'

(3) दक्षिण का पठार :– यह त्रिभुजाकार भूखण्ड है।गंगा के मैदान में दक्षिण की ओर विस्तृत विध्याचल तथा सतपुड़ा द्वारा पृथक कियाहुआ क्षेत्र है। नर्मदा और

महानदी भी यहीं दो भागों मंक बाँटती है। विध्याचल के नीचे के भाग को दक्षिण भारत और प्राचीन ग्रन्थों में दक्षिण क्षेत्र कहा गया है। विध्यांचल के दुर्गम पठार तथा जंगलों को पार करना अत्यंत दुष्कर कार्य है, इसी कारण दक्षिण का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास भिन्न है। परन्तु यहक्षेत्र प्राचीन भारतीय संस्कृति का रक्षक है क्योंकि आक्रमणकारी दक्षिण भारत तक कम ही पहुँचे, जिससे वहाँ हमारी संस्कृति सुरक्षित रह सकी। यहाँ की भूमि पठारी है अतः जीवन अत्यंत संघर्षशील ही रहा है। छापामार रणनीति (Gorrilla Tactics) इसी क्षेत्र की देन है। दक्षिण क्षेत्र सदैव से इतिहासकारों की उपेक्षा का शिकार रहा है क्योंकि प्राकृतिक अवस्था के कारण यह देश के अन्य भागों से पृथक रहा है परिणामस्वरूप यहाँ के निवासियों ने अपने ढंगसे संस्कृति का विकास किया।

(4) पूर्वी एवं पश्चिमी क्षेत्र –दक्षिण के लम्बे और संकीर्ण समुद्रतटीय मैदान, जो पूर्वी तथा पश्चिमी तट पर उत्तर से दक्षिण तक फैले हुए हैं पश्चिमी तट पर कोंकण व मालाबार क्षेत्र में अनेक उन्नतशील बन्दरगाह तथा पूर्वीतट पर गोदावरी, कृष्णा, कावेरी की उर्वरा भूमि अथवा डेल्टा हैं। दक्षिण के पठार के पिछले पश्चिमी भाग में श्रृंखलाबद्ध ऊँची पर्वत श्रेणियों की दीवार हैं जोअरब सागरीय तटरेखा के समानान्तर 700 मील की लम्बाई तक चली गयी है। यह पश्चिमी घाट के नाम से प्रसिद्ध है। समुद्र तट से 3,000 से 6,000 फीट ऊंचे पश्चिमी घाट हैं, जो अभेद्य एवं अजेय दुर्ग हैं। यातायात एवं संचार साधनों के अभाव में प्राचीन व मध्य युग में पश्चिमी घाट के अनेक स्थलों पर चढ़कर उन्हें पार करना असंभव था। स्थल क्षेत्र संकीर्ण है जो 20 फीट से अधिक चौड़ा नहीं हैं जो समुद्र तट एवं पश्चिमी घाट के मध्य में विस्तृत है तथा अत्यंत उर्वरक है। तटीय क्षेत्र के निवासी पठार क्षेत्र के निवासियों से लगभग पृथक रहे हैं। इसके अलावा पश्चिमी तट के सुदूर उत्तर में पश्चिमी घाट पर नर्मदा एवं ताप्ती नदियों ने उसके ढाल की दुर्गमता को विदीर्ण कर विस्तृत घाटियों का निर्माण कर दिया है। पश्चिमी घाट के बन्दरगाह पाश्चात्य देशों के साथ होने वाले भारतीय वाणिज्य व्यवसाय के प्रमुख निर्गम स्थान रहे और मध्य–पूर्व की सभ्यता के घनिष्ठ सम्पर्क में बने रहे। अनेक नदियों के कारण पूर्व तटीय प्रदेश (पूर्वी घाट) वैभवशाली साम्राज्यों के निर्माण में सहायक हुआ। पूर्वी बन्दरगाहों ने प्रारम्भ से ही पूर्वी एशिया में सभ्यता एवं संस्कृति के प्रसार के लिए राजमार्ग निर्मित किये। इसी कारण वृहत्तर भारत का अभ्युदय हुआ। यह समुद्र व्यापार एवं उपनिवेश का साधन रहा है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि भारत एक सम्पूर्ण भौगोलिक ईकाई है। भौगोलिक दृष्टि से विशिष्ट प्राकृतिक सीमाओं के कारण भारत सुरक्षित रहा हैं। भारत की भौगोलिक सीमाओं ने इस देश को संसार के अन्य देश से भिन्न एवं एकान्त बनाया है। प्राकृतिक अवस्थाओं ने यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति को प्रभावित किया है।

हिमालय की गगनचुम्बी श्रेणी के नीचे अहंकारहीन संस्कृति का विकास हुआ। सिन्धु के मैदान ने मनुष्यों को उदार बनाया। उर्वरा भूमि ने लक्ष्मी और सरस्वती का केन्द्र बनाया तो दक्षिण की ऊबड़–खाबड़ धरती ने संघर्षशील मराठा और छापामार प्रणाली को परिपुष्ट किया। इस देश की विशालता ने राजनीतिक एकता में व्यवधान उत्पन्न किया तो धार्मिक एकता को प्रोत्साहन मिला। यहाँ की भौगोलिक स्थिति से ही यहाँ के इतिहास का निर्माण हुआ।

भारत के निवासी

भारत के निवासी विभिन्न प्रजातियों (नस्लों) के हैं। उसका सर्वप्रमुख कारण यह है कि प्राचीन काल से ही भारत पर अनेक देशों के आक्राँताओं ने आक्रमण किये। आक्रमणकारियों के आगमन से अनेक जाति के लोगों का भारतीय संस्कृति से सम्पर्क हुआ। परिणामास्वरूप पारस्परिक सम्बन्धों, व्यापारिक कारणों से यहाँ पर अनेक जातियों के लोग रच बस गये।

भू–गर्भ शास्त्रियों के अनुसार सृष्टि के प्रारम्भ में अफ्रीका, भारत, प्रशान्त महासागर के द्वीप तथा आस्ट्रेलिया आपस में मिले हुए थे। अनुमान है कि पाँच लाख वर्ष पूर्व भारत में मानव रहता था। तब से लेकर आज तक अनेक प्रजातियों के लोग भारत आये। जितनी प्रजातियाँ भारत में है, शायद ही कहीं और हों। कश्मीर से राजस्थान तक आर्य भाषाभाषी, हिमालय के उत्तरी और उत्तर पूर्वी प्रदेशों में मंगोल, दक्षिण में द्रविड़, विंध्याचल के पहाड़ी भागों में मुंडों या निषादों की प्रमुखता रही है। भौतिक नृवैज्ञानिकों ने भारतीय लोगों का जो वर्गीकरण किया है उसमें विविधता मिलती है। ऐतिहासिक साहित्य में बी.एस. गुहा कृत वर्गीकरण अन्य प्रयासों की तुलना में अधिक प्रचलित है। प्रमुख मूल प्रजातियाँ (नस्लें) कुल पाँच हैं –

1. नीग्रोटो, 2. प्रोटो आस्ट्रेलाइड, 3. भूमध्य सागरीय, 4. मंगोल, 5. आद्यनार्डिक (प्रोटो–नार्डिक)।

यह वर्गीकरण भौतिक लक्षणों जैसे मस्तक सूचकांक (Cephalic Index) आदि के आधार पर दिया गया था। नृवंशशास्त्रियों (Anthropologists) के अनुसार प्रमुख प्रजातियाँ निम्नवत हैं :–

1. नीग्रो (Negrito) :–कद छोटा, चौड़ा व छोटा मुँह, मोटे होठ, छोटी व पतली टाँगों के व्यक्ति नीग्रो प्रजाति के होते हैं। यह जाति भारत में ईरान व बलोचिस्तान होते हुए जलमार्ग से प्रविष्ट हुई। भारत में यह जाति अण्डमान द्वीप समूह में पायी जाती है।
2. प्रोटो आस्ट्रेलाइड :– यह भारत में मध्य भारत तथा विंध्यप्रदेश में पाये जाते

हैं। छोटा कद, दीर्घ कपाल, धंसी हुई मोटी नाक, मोटे होंठ, जबड़े की हड्डियाँ आगे बढ़ी हुई होती हैं। इनका मूल निवास स्थान फिलीस्तीन था।

3. द्रविड़ या भूमध्य सागरीय :– लम्बा सिर, नोंकदार ठोढ़ी, उठी हुई नाक, पतले होंठ, छोटा कद, हल्के भूरे बाल व आँखें। विद्वानों का विचार है कि सिन्धु सभ्यता के निर्माता यही थे। वर्तमान में यह दक्षिण भारत में मिलते हैं तथा तमिल, तेलगू, कन्नड़ इनकी भाषायें हैं।
4. मंगोल :– चौड़ा व चपटा चेहरा, छोटा कद, लम्बा धड़, मोटे होंठ, गोल ठोढ़ी, आँखें भूरी व काली होती है। वर्तमान में यह प्रजाति आसाम और उत्तर पूर्वी सीमा वाले क्षेत्र में पायी जाती है।
5. प्रोटो–नार्डिक (आर्य) :– गोरी त्वचा, लम्बा सिर, ऊँची नाक, पतले होंठ, सुनहरे बाल तथा लम्बा कद वाला एक विशेष भाषाभाषी समूह आर्य कहलाया। प्रारम्भ में इनके प्रमाण गंगा और यमुना के दोआब में मिलते है। यह प्रश्न वामपंथी इतिहासकारों की गलत सोच और शैक्षणिक दबदबे के कारण विवादास्पद है कि आर्य भाषा भाषियों की पहचान कहाँ के मूल निवासी के रूप में की जाए? वैदिक सभ्यता के जनक आर्य ही थे। कालान्तर में यह सम्पूर्ण भारत में फैल गये।

अन्य जातियाँ :– उपर्युक्त प्रजातियों के अतिरिक्त कुषाण, बैक्ट्रियन, वरद व पार्थियन, तुर्क, अफगान तथा मुगल प्रजातियाँ भी भारत में आयीं और भारत की संस्कृति में विलीन हो गयीं।

संचार मार्ग

देश की भौगोलिक स्थिति के आधार पर ही संचार व्यवस्था का निर्धारण होता है। भारतीय भौगोलिक स्थिति अनेकता में एकता लिए हुए है, परन्तु भारत में संचार मार्ग उसकी भौगोलिक एकता के कारण ही विकसित हो सका है। वस्तुओं के आदान–प्रदान के लिए सुगम संचार होना अत्यन्त आवश्यक है। भारत के प्रमुख आंतरिक एवं बाह्य मार्गों का वर्णन निम्नाकिंत है–

आन्तरिक मार्ग–गंगा की घाटी के बीच से नीचे से जो मार्गउत्तर पश्चिम की ओर जाता था, उसे प्रमुख मार्ग माना जाता है। यह मार्ग न केवल स्थानों के मध्य सम्बंध स्थापित करता है वरन् गंगा के कछारी संकीर्ण पथों के सहारे–सहारे जो अनेक स्थान पड़ते हैं, वह सम्पर्क सूत्र का कार्य करते हैं। इस मार्ग का प्रथम मुख्य उपमार्ग पश्चिमी पंजाब से सिन्धु नदी की घाटी तक जाता है। दूसरा उपमार्ग दिल्ली मथुरा आगरा क्षेत्र से पश्चिमी भारत की ओर जाता है। तीसरा उपमार्ग इलाहाबाद से प्रारम्भ होकर मध्य

भारत से होकर गंगा घाटी तथा दक्षिण के मध्य संबंध बनाता है। गंगा घाटी के दक्षिणी मुहाने से एक मार्ग उड़ीसा के दक्षिण की ओर जाता है।

बाह्य मार्ग – उत्तरी पश्चिम के मार्ग खैबर, गोमल तथा बोलन दर्रों से गुजरते हैं। ये मार्ग अफगानिस्तान की ओर जाते हैं। मध्यकाल में उत्तर पश्चिम सीमांत पर 52 पहाड़ी दर्रे उपयोगी हैं। दक्षिण ब्लूचिस्तान से मकरान होते हुए ईरान जा सकते हैं। सिन्ध, अफगानिस्तान, पूर्वी ईरान, सोवियत, मध्यएशिया का दक्षिणी भाग–ये सभी घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध हैं। उत्तर पश्चिम मार्ग से देश के बाहर के अनेक मार्ग जुड़े हुए हैं। मध्य एशिया के पूर्वी हिस्से में कश्मीर होकर जाते हैं। आसाम के मार्ग से बर्मा व चीन का रास्ता बनता है। भारत के पश्चिमी तट और पूर्वी अफ्रीका तथा लाल सागर के समुद्र तटों के सहारे से समुद्र पार करनासंभव है।

अतः स्पष्ट है कि भारतीय उपमहाद्वीप अपने पड़ोसी प्रदेशों से अनेक स्थल एवं समुद्री मार्गों द्वारा भलीभांति जुड़ा हुआ है।

2

प्रागैतिहासिक काल

सभ्यता का उदय प्रकृति की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मानव विकास के साथ–साथ सभ्यता का विकास उत्तरोत्तर होता गया। हमारे देश के प्रारम्भिक मानव की कहानी 5,00,000 वर्ष पुरानी है। मनुष्य की प्रारम्भिक स्थिति क्या थी? इसका सर्वसम्मत उत्तर नहीं है। परन्तु मानव विकास की कहानी को इतिहासकार तीन भागों में विभाजित करते है–

(1) प्रागैतिहासिक (Prehistory)– सामान्यतः सिन्धु सभ्यता के पूर्व का काल
(2) आद्ध इतिहास (Proto History)– सिन्धु सभ्यता और वैदिक संस्कृति का काल
(3) ऐतिहासिक काल (History)– छठीं शताब्दी ई.पू. के बाद का काल

'मानव की उस प्रगति को जिसके इतिहास का ज्ञान हमें नहीं है किन्तु पुरातत्व सम्बन्धी खोजों के आधार पर जिसका हम अनुमान लगाते हैं उसे प्रागैतिहासिक काल कहते हैं।' भारत में पाषाणकालीन सभ्यता की खोज का कार्य सर्वप्रथम 1863 ई. में आरम्भ हुआ, जब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के विद्वान रॉबर्ट ब्रूस फुट ने 'पल्लवरम' (मद्रास) से पूर्व पाषाण कालीन उपकरण प्राप्त किये। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अनुसन्धान के रूप में 1935 ई. में डी. टेरा तथा पीटरसन के नेतृत्व में येल कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के अभियान दल ने शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में स्थित 'पोतवार' के पठारी भाग का व्यापक सर्वेक्षण किया। प्रागैतिहासिक काल की सभ्यता के निम्नलिखित सोपानों की कल्पना की गयी है –

(1) पूर्व या पुरा पाषाण काल (Paleolithic) – 2.5 लाख ई.पू. से 10,000 ई.पू. तक।
(2) मध्य पाषाण काल (Mesolithic)– 10,000 ई.पू. से 4,000 ई.पू. तक

नमूना • SAMPLE

(3) उत्तर या नवपाषाण काल (Neolithic)– 7,000 ई.पू. से 1,000 ई.पू. तक
(4) ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic)– 2,000 ई.पू. से 800 ई.पू. के बीच।

(1) पुरा पाषाण काल (Paleolithic) :– पुरापाषाण युग का विकास भूगर्भ विज्ञान के अनुसार अभिनूतन युग (Pleistocene period) में हुआ । इसे साधारणतः हिमकाल भी कहा जाता है। हिमकाल के समय ऊँचे स्थानों पर बर्फ की चादर जमी थी। इस युग के प्राप्त पत्थरों के औजारों से यह ज्ञात होता है कि पहली मानव बस्तियाँ हिमयुग के मध्य में लगभग 50,000 वर्ष पूर्व आरम्भ हुईं। पुरापाषाण काल में मानव पत्थरों से बने औजारों को प्रयोग में लाता था। उत्खनन द्वारा प्राप्त भग्नावशेषों से यह ज्ञात हुआ है यह मनुष्य 'क्वार्टजाइट' पत्थरों का प्रयोग करता था।

इन पत्थरों का प्रयोग वह हथियारों के रूप में करता था। खानाबदोश जीवन व्यतीत करता था तथा ऐसे स्थान पर रहना अधिक पसंद करता था जहाँ आसानी से शिकार, खाना व पानी मिल जाए। सुरक्षा के लिए वह समूहों में रहता था। इस सभ्यता के चिन्ह दक्षिण और उत्तर भारत के सिन्धु और झेलम व जम्मू आदि स्थानों पर मिले हैं। प्रमाणों के अभाव के कारण यह प्रश्न विवादास्पद है कि यह सभ्यता उत्तर से दक्षिण की और फैली या दक्षिण से उत्तर की और फैली थी।

इस युग के हथियार फरसा, बाण, भाला, फेंकने वाले पत्थर हथौड़े, चमक पैदा करने वाले थे। वे अपने रहने के लिए किसी प्रकार का भवन या झोपड़ी संभवतः नहीं बना पाये थे। पत्थर के औजारों और जलवायु के बदलाव के आधार पर भारत में पुरापाषाण युग को तीन भागों में विभक्त किया गया है :–

(A) प्रारम्भिक पुरा पाषाण काल (B) मध्य पुरा पाषाण काल (C) उच्च पुरा पाषाण काल

(A) प्रारम्भिक पुरा पाषाण काल :– इसका काल ढाई लाख ई.पू. से 1,00,000 ई. पू. तक था। इसे सोहन संस्कृति भी कहा जाता है क्योंकि इस युग के अधिकांश अवशेष सोहन नदी की घाटी में पाए गए। यह अब पाकिस्तान में है। आदि सोहन से हमें दो प्रकार के पेबुल उपकरण– चापर व चापिंग मिलते हैं। इसके अतिरिक्त इसके अवशेष मध्य भारत में नर्मदा के किनारे, उ. प्र. में मिर्जापुर जनपद की बेलन घाटी, महाराष्ट्र के नेवासा घाटी, दक्षिण बिहार की सिंह भूमि, गुजरात के साबरमती तथा आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले में प्राप्त हुए है। कांचमाणि जो औजार बनाने के लिए प्रयुक्त होता था वह सबसे लोकप्रिय वस्तु थी। शिकार हाथ की कुल्हाड़ियों को मुट्ठी में पकड़कर किया जाता था। औजारों का प्रयोग जानवरों को चीरने–फाड़ने के लिए मुख्यतः किया जाता था।